समीक्षा

पुस्तक समीक्षा एवं शोध की श्रेष्ठ त्रैमासिक पत्रिका
अक्तूबर-दिसंबर 2013 वर्ष : 46 अंक-3

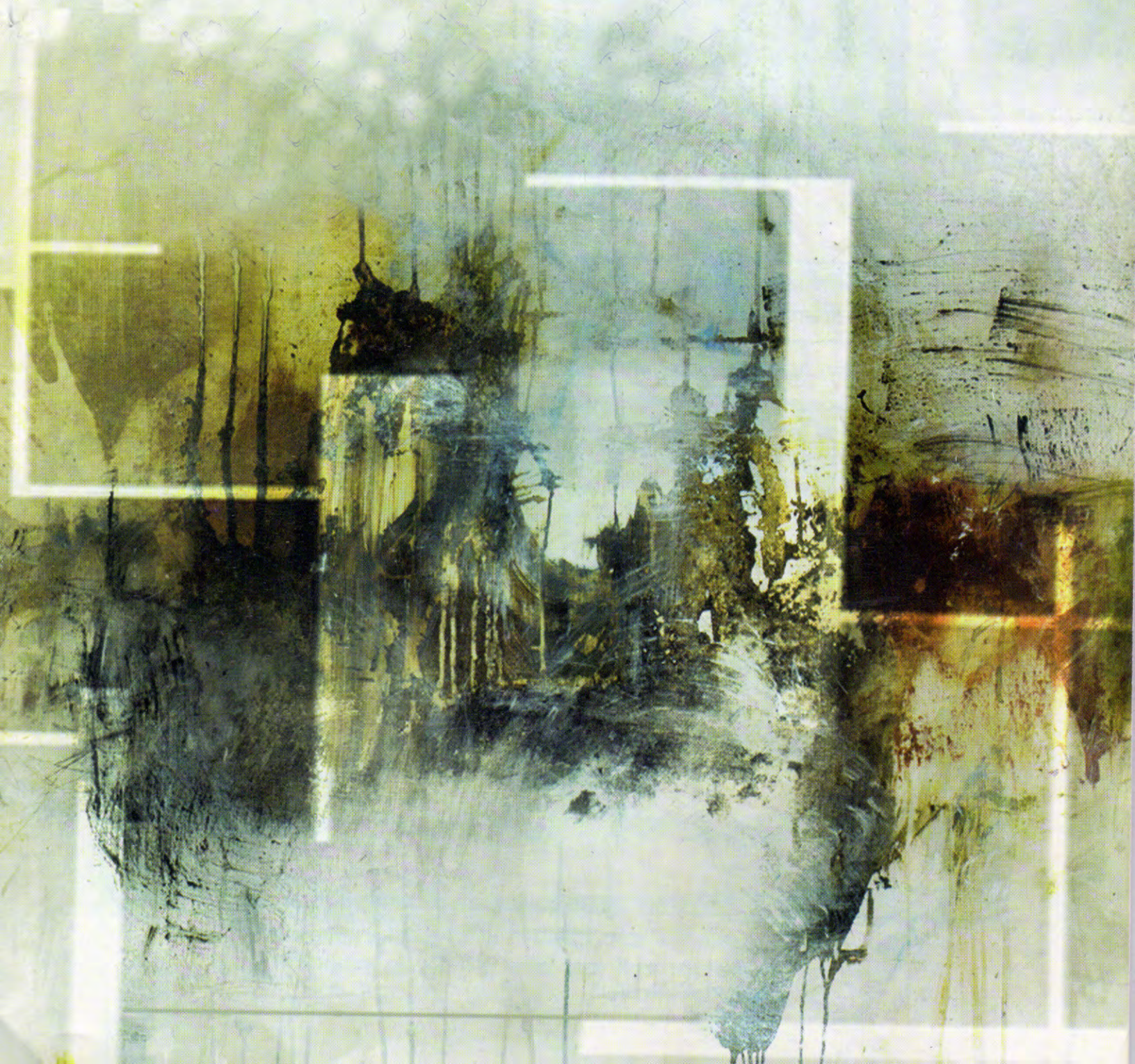

समीक्षा

पुस्तक समीक्षा एवं शोध की श्रेष्ठ त्रैमासिक पत्रिका

अक्टूबर-दिसंबर, 2013

वर्ष : 46, अंक : 3

संपादक

सत्यकाम

प्रबंध संपादक

महेश भारद्वाज

प्रबंध कार्यालय

प्रबंध संपादक, समीक्षा
3320-21 जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोनः 011-23282733; टेलीफैक्स : 011-23270715
E-mail: samikshaquaterly@gmail.com
samayikprakashan@gmail.com

संपादकीय कार्यालय

संपादक समीक्षा
एच-2, यमुना, इग्नू, मैदानगढ़ी,
नई दिल्ली-110068
फोन : 011-29533534
E-mail: satyakamji@gmail.com

समीक्षा

अक्टूबर-दिसंबर, 2013
वर्ष : 46, अंक : 3

प्रकाशन तिथि : 15 दिसंबर, 2013

संस्थापक संपादक : गोपाल राय
सहायक संपादक : अमिताभ राय
सहायक प्रबंध कार्यालय : हेमचन्द्र पन्त

सहयोग राशि
मूल्य ₹ 30 *(बिना डाक खर्च के)*

डाक द्वारा भेजी जाने वाली पत्रिका
मूल्य ₹ 50

व्यक्तिगत ग्राहकों के लिए
वार्षिक ₹ 200 त्रैवार्षिक ₹ 600 आजीवन ₹ 2000

संस्थाओं के लिए
वार्षिक ₹ 300 त्रैवार्षिक ₹ 900 आजीवन ₹ 3000

निवेदन

- कृपया सारे भुगतान मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'समीक्षा' के नाम (देय दिल्ली-नई दिल्ली) से किए जाएं।
- मनीऑर्डर के कूपन पर प्रेषित धन राशि और प्रेषक का नाम-पता अवश्य लिखें।
- पत्रिका का कोई अंक न मिलने पर उसकी सूचना **प्रबंध कार्यालय** को शीघ्र दें।
- पत्रिका के मूल्य/बिल का भुगतान बैंक ड्राफ्ट द्वारा यथाशीघ्र करें।

'समीक्षा' में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से संपादक की सहमति जरूरी नहीं।

- संपादक, सहायक संपादक अवैतनिक, अव्यावसायिक रूप से मात्र साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म में सहयोगी।
- समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय में विचारणीय।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त

- आवरण : निर्दोष त्यागी, कल्याणी कम्प्यूटर सर्विसेज, नई दिल्ली द्वारा लेजर कंपोजिंग एवं रुचिका प्रिंटर्स, शाहदरा दिल्ली द्वारा मुद्रित।

SAMIKSHA
A quaterly journal of Book Reviews & Research in Hindi
Published by Mahesh Kumar Bhardwaj, Managing Editor, Samiksha
3320-21, Jatwara, N.S. Marg, Daryaganj, New Delhi-110002
E-mail : samikshaquaterly@gmail.com

समीक्षा

पुस्तक समीक्षा एवं शोध
की श्रेष्ठ त्रैमासिक पत्रिका

अक्टूबर-दिसंबर, 2013
वर्ष : 46, अंक 3

अनुक्रम

श्रद्धांजलि	संपादकीय	*सत्यकाम*	5
साक्षात्कार	लेखन ही मेरी आत्मशक्ति है *(उर्मिला शिरीष से शैलेन्द्र कुमार शैली की बातचीत)*	*शैलेन्द्र कुमार शैली*	6
कहानी	ये कहानियां बाद में देर तक गूंजती रहती हैं *(कुर्की और अन्य कहानियां / उर्मिला शिरीष)*	*पंकज सुबीर*	10
उपन्यास	मुस्लिम महिलाओं के जीवन पर साहसिक विमर्श *(लेडीज क्लब / नमिता सिंह)*	*शरद सिंह*	13
उपन्यास	सावित्री आख्यान की अद्यतन प्रासंगिकता *(विजयिनी / मृदुला सिन्हा)*	*उषा महाजन*	15
उपन्यास	नारीवादी लोकतंत्र का नया पाठ *(वृंदा : गाथा सदी की / ब्रजेश)*	*नीतू शर्मा*	17
उपन्यास	जीवन के अंतर्साक्ष्यों का जीवंत बयान *(साथ चलते हुए... / जयश्री रॉय)*	*अरुण अभिषेक*	19
उपन्यास	अपराधबोध नहीं स्त्री का जीवन *(जीने के लिए / सरिता शर्मा)*	*तरसेम गुजराल*	21
कहानी	सामाजिक जीवन का यथार्थ *(बास्सा कल्लू गिर का चोग़ा / हरिपाल त्यागी)*	*अरविंद कुमार सिंह*	26
कहानी	संक्रमणशील यथार्थ और नयी-नयी जीवन-स्थितियां *(ब-बॉय... / कृष्ण बिहारी)*	*वेदप्रकाश अमिताभ*	28
कहानी	विमर्श का नया कोण *(एक सच यह भी / सं. मधु अरोड़ा)*	*जगदंबाप्रसाद दीक्षित*	30
कहानी	एक 'लिखावट' यह भी *(दस्तखत और अन्य कहानियां / ज्योति कुमारी)*	*चंद्रकला त्रिपाठी*	34

व्यंग्य	श्याम रंग की उज्ज्वल व्यंग्य-व्यंजनाएं *(ज्यों ज्यों बूड़ें श्याम रंग / प्रेम जनमेजय)*	*गौतम सान्याल*	36
संस्मरण	लेखकीय गरिमा के विनम्र आत्मकथ्य *(माफ करना यार / बलराम)*	*प्रमोद भार्गव*	38
सफरनामा	बला की खूबसूरती है सोफिया में... *(वितुशा की छांव में / सत्यकाम)*	*आनंदवर्धन*	40
सफरनामा	सांस्कृतिक टकरावों का स्मृत्याख्यान *(अलविदा अन्ना / सूर्यबाला)*	*त्रिभुवन राय*	42
पत्रकारिता	पत्रकारिता के विविध आयाम *(पहला संपादकीय / विजयदत्त श्रीधर)* *(समय के साथ / निशिकांत ठाकुर)*	*कृष्णचंद्र लाल*	44
आलोचना	तुलसीदास की कविता और कला का विवेचन *(तुलसीदास / नन्दकिशोर नवल)*	*रेवतीरमण*	46
आलोचना	प्रतिरोध और प्रतिरक्षा का घोषणापत्र *(साहित्यिक पत्रकारिता का साधु संग्राम / शिवनारायण)*	*कान्तिकुमार जैन*	48
आलोचना	कहानी के लोकतंत्र में आलोचक की नागरिकता *(कहानी का लोकतंत्र / पल्लव)*	*रत्नेश विष्वक्सेन*	50
मूल्यांकन	सशक्त स्त्रीवादी स्वर *(अनामिका : एक मूल्याकन / सं. अभिषेक कश्यप)*	*सुरेश पंडित*	52
कविता	साफबयानी के कायल शायरों पर एक नजर *(फ़ैज़ की सदी / सं. रवीन्द्र कालिया* *शहरयार सुनो / सं. गुलजार)*	*तरुण कुमार*	55
कविता	धूप के टुकड़े में छांह की शीतलता *(धूप के टुकड़े / रामदरश मिश्र)*	*श्रीकांत सिंह*	57
नाटक	प्रयोगधर्मिता रंगमंचीय चुनौती *(अंत का उजाला / कृष्ण बलदेव वैद* *महामाई / चंद्रशेखर कंबार)*	*लवकुमार लवलीन*	58
विविध	विविध रूपों में बनता समाज *(देवता बोलते नहीं / लता शर्मा* *संगतिन-यात्रा / संगतिन लेखक समूह* *अपनी धरती अपने लोग / मधु कांकरिया* *श्रेष्ठ सिख कथाएं / शरद सिंह)*	*जसबिन्दर कौर बिन्द्रा*	61

संपादकीय

❑ *सत्यकाम*

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

गीता के इस श्लोक के साथ मैं, सत्यकाम, अपनी ओर से और समीक्षा परिवार की ओर से उन सभी साहित्यकर्मियों, रचनाकारों, कलाकारों की दिवंगत आत्मा को प्रणाम करता हूं और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जो हमें छोड़ कर चले गए। निस्संदेह सशरीर वे हमें छोड़ कर चले गए पर उनकी रचनाएं, उनका काम, साहित्य, संस्कृति के क्षेत्र में उनके योगदान को न तो शस्त्र काट सकते हैं, न जला सकती है, न जल गला सकती है, न वायु सुखा सकता है।

इधर एक के बाद एक अपनों का जाना हिला गया। अभी राजेंद्र यादव की चिता की अग्नि ठंडी नहीं हुई थी कि परमानंद जी चले बसे और जब परमानंद जी के जाने से लगी चोट को सहला रहे थे, तब तक विजयदान देथा के दिवंगत होने की खबर आई। इसके पहले रघुवंश जी के जाने का भी दुखद समाचार मिला।

आना-जाना तो एक सिलसिला है और पीढ़ियां इसी तरह बदलती रहती हैं पर राजेंद्र यादव पीढ़ियों से परे के लेखक, संयोजक और नेतृत्व प्रदान करने वाले शख्स थे। 'हंस' के जरिए उन्होंने जो साहित्यिक आंदोलन खड़ा किया और जिस प्रकार उन्होंने हाशिए की आवाज को मुख्य धारा में तब्दील कर दिया, उसे हिंदी साहित्य और भारतीय साहित्य युगों-युगों तक याद रखेगा।

समीक्षा के अक्टूबर-दिसंबर 2011 अंक यानी ठीक दो साल पहले हमने डॉ. रघुवंश का एक साक्षात्कार (दिनेश कुमार) और उन पर डॉ. राजेंद्र कुमार का एक संस्मरण लेख छापा था। उस समय हमें साक्षात्कार लेने में काफी कठिनाई हुई थी क्योंकि वे कुछ कहने-सुनने की हालत में नहीं थे। पर जो कुछ भी उनके मुख से निकला उसे दिनेश जी ने बड़े करीने से प्रस्तुत किया। संभवतः यह डॉ. रघुवंश का अंतिम साक्षात्कार था। अदम्य जिजीविषा के मालिक डॉ. रघुवंश ने अपनी सारी शारीरिक अक्षमताओं को नकार कर अपनी उपस्थिति दर्ज की।

परमानंद जी को आरंभ से ही देखता, सुनता, पढ़ता रहा हूं। उन्होंने हिंदी साहित्य का कोई कोना अपनी लेखनी से अछूता नहीं रहने दिया। वे हरेक विषय पर बड़ी संजीदगी और मौलिकतापूर्ण ढंग से अपने विचार रखा करते थे। हिंदी साहित्य जगत प्रो. परमानंद श्रीवास्तव के कामों को हमेशा याद रखेगा।

विजयदान देथा जैसे साहित्यकार विरल होते हैं। जब सारी जमात कुछ न कुछ हासिल करने के लिए दौड़ रही हो, उस दौर में गांव में बैठकर साहित्य सृजन करना और लोक साहित्य को विश्व साहित्य के स्तर पर उठाने का काम कोई ऋषिवत् मनुष्य ही कर सकता है। न केवल राजस्थानी और हिंदी साहित्य अपितु पूरा भारतीय साहित्य उनके इस देय के लिए ऋणी रहेगा।

बाल साहित्य को शिखर तक पहुंचाने वाले साहित्यकार श्री हरिकृष्ण देवसरे भी हमारे बीच नहीं रहे। उनका जन्म मध्य प्रदेश के नागोद में 09 मार्च, 1938 को हुआ था। वे पराग के संपादक भी थे। संयोग ही कहा जाएगा कि वे जिंदगीभर बच्चों के लिए साहित्य सृजित करते रहे और उनका निधन भी बाल दिवस के दिन ही हुआ। अभी-अभी दुखद खबर आई है कि दलित साहित्य के अगुआ महत्त्वपूर्ण साहित्यकार श्री ओम प्रकाश वाल्मीकि भी हमें छोड़कर चले गए। उनकी आत्मकथा 'जूठन' न केवल हिंदी साहित्य बल्कि भारतीय साहित्य की एक अनूठी रचना है। वाल्मीकि जी का जन्म 30 जून 1950 को मुजफ्फरनगर के बरला गांव में हुआ था। रचना भाटिया का दुखद 'संदेश' मिला। भाषा वैज्ञानिक कैलाश चन्द्र भाटिया भी हमारे बीच नहीं रहे। समीक्षा परिवार की ओर से नमन और श्रद्धांजलि।

लगातार हमने इतने साहित्यकारों को इतने कम समय में खोया है कि सारा साहित्य संसार आहत है। परंतु जीवन का यही क्रम है और हम लगातार जिंदगी में करते क्या हैं, कुछ खोते हैं और कुछ पाते हैं। खोना हमेशा विषाद का विषय होता है।

अपने को संतोष देने के लिए गीता के श्लोक के साथ ही एक बार फिर दिवंगत आत्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि और सलाम।

जातस्य हि ध्रुवो म त्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।

बुजुर्गों का जाना जिंदगी में एक रिक्तता छोड़ जाता है पर इन लोगों ने जाते-जाते मशाल नई पीढ़ी को थमा दी है; इसे प्रज्वलित रखना अब नए कंधों की जिम्मेदारी है।